प्रतिमा विज्ञान

वैष्णव पुराणों के आधार पर

डॉ. इन्दुमती मिश्र

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

Scanned with OKEN Scanner

प्रतिमा-विज्ञान

डॉ. इन्दुमती मिश्र

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

☐ प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत, भारत सरकार के द्वारा रियायती दर पर उपलब्ध कराये गये कागज एवं मध्यप्रदेश शासन की ओर से प्राप्त अनुदान की मदद से रियायती मूल्य पर मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,
भोपाल (म.प्र.) 462 003
दूरभाष (0755) 553084

संस्करण : चतुर्थ, (आवृति) 2009

आवरण : विनय गोरडे, भोपाल

मूल्य : रु. 100 (सौ) मात्र

कम्पोजिंग : सोनी ग्राफिक्स, भोपाल

मुद्रक : ग्राफिक आर्टस, भोपाल
मो : 9893039404

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम परिच्छेद

पुराण एवं वैष्णव पुराण

भारतीय साहित्य के ज्ञान के लिए वेदों के बाद दूसरा अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोत इतिहास-पुराण के रूप में प्राप्त होता है।

पुराणों की प्राचीनता

पुराणों का उल्लेख अथर्ववेद[1], शतपथ ब्राह्मण[2], गोपथ ब्राह्मण[3], जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण[4], बृहदारण्यक उपनिषद्[5], छान्दोग्य उपनिषद्[6], तैत्तिरीय आरण्यक[7], सांख्यायन-श्रौत सूत्र[8] तथा गौतम धर्म-सूत्र[9] में हुआ है। अथर्व संहिता का कथन है कि यज्ञ के उच्छिष्ट में से यजुर्वेद के साथ ही ऋक्, साम, छन्द और पुराण उत्पन्न हुए।[10] शतपथ ब्राह्मण तो पुराण को ही वेद मानता है।[11] जिस प्रकार गीले ईंधन में अग्नि लगाने से धुआँ निकलता है उसी प्रकार ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, आंगिरस अथर्ववेद, इतिहास, पुराण विद्या, धनुर्वेदादि, उपनिषद् श्लोक सूत्र, मन्त्र विवरण तथा अर्थवाद ये सब उसी महद्भूत परमात्मा के ही निःश्वास है -

'स यथार्द्रैधाग्नेरभ्याहितात्पृथग्धूमा विनिश्चरन्त्येवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यदृग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसइतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानान्यस्यैवैतानि निश्वसितानि॥[12]

---

1. अथर्व. 7/7/24 और 15/6/4.
2. शत. ब्रा. 11/5/6/8.
3. गो. ब्रा. 1/10.
4. जै. उ. ब्रा. 1/53.
5. बृह. उ. 2/4/10, 4/1/2.
6. छांदो. उ. 3/4/1, 2, 7/1/2/4.
7. तैत्ति. आर. 2/9.
8. सांख्य. श्रौ. सू. 16/2/27.
9. गौ. ध. सू. 8/6 तथा 11/9.
10. ऋचः सामानि छंदांसि पुराणं यजुषा सह अथर्व. 71/7/24.
11. ...... पुराणं वेदः सोऽयमिति किञ्चित् पुराणमाचक्षते - शत. ब्रा. 13/4/3/13.
12. शतपथ ब्रा. 13/4/3/13.

विषय-सूची

पृष्ठ

प्रस्तावना

भूमिका

प्रथम परिच्छेद

पुराण एवं वैष्णव पुराण 1-45

पुराणों की प्राचीनता, इतिहास और पुराण, पुराणों की संख्या, पुराणों के भेद, **अष्टादश पुराणों का वर्गीकरण, वर्ण्य विषय का आधार** 1. साहित्यिक पुराण, 2. तीर्थ संबंधी पुराण, 3. परिवर्धित पुराण, 4. ऐतिहासिक पुराण, 5. साम्प्रदायिक पुराण, 6. संशोधित पुराण, **देवों का आधार** 1. विशिष्ट देवतत्त्व पूर्ण, 2. साम्प्रदायिक, **गुणों के आधार** - सात्त्विक पुराण, राजस् पुराण, तामस् पुराण, **वैष्णव पुराण** - विष्णु पुराण, नारदीय पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, गरुड पुराण, वराह पुराण, पद्मपुराण।

द्वितीय परिच्छेद

प्रतिमा लक्षण 46-76

ब्रह्म के द्विविध रूप, विभिन्न युगों के अनुसार रूप एवं वर्ण, प्रतिमा शब्द का अर्थ, **प्रतिमा द्रव्य**, मिट्टी, लकड़ी, पत्थर, प्रशस्त शिला, धातु, मणि, प्रतिमा भेद-चल-अचल

तृतीय परिच्छेद

प्रतिमा विज्ञान का विकास 79-94

चतुर्थ परिच्छेद

त्रिमूर्ति 95-278

त्रिमूर्ति का स्वरूप, ब्रह्मा, विष्णु-वैष्णव चतुर्व्यूह अथवा चतुर्मूर्ति, वासुदेव संकर्षण (बलराम अनन्त), प्रद्युम्न, अनिरुद्ध

विष्णु की चौबीस मूर्तियाँ विष्णु - भुजाएँ एवं आयुध, वस्त्र, आभूषण, वाहन, देवी, योगमाया, लक्ष्मी, लक्ष्मी विष्णु की आत्मा, लक्ष्मी-नारायण, भू-देवी, सरस्वती, रुक्मिणी, पार्वती, भद्रकाली, गौरी, नन्दा, दुर्गा, महिषासुर मर्दिनी, महाकाली, सप्तमातृकाएँ - ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा।

विष्णु के अवतार - अवतार का उद्देश्य, अवतारों की संख्या, दशावतार

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner